12th Hindi Micro Notes — By BSEB CAREER

(निबंध लिखे) 200 से 250शब्दों में (8 अंक)

1) कोरोना वायरस/ महामारी 2) पर्यावरण की समस्या /पर्यावरण प्रदूषण /प्रदूषण 3) दहेज प्रथा 4) छात्र एवं राजनीति /विद्यार्थी एवं राजनीति 5) मेरे प्रिय कवि 6) मेरा प्रिय खेल /क्रिकेट 7) भ्रष्टाचार 8) विज्ञान वरदान और अभिशाप 9) बिहार प्रगति के पथ पर(10 आतंकवाद 11) बेरोजगारी 12 (महिला सशक्तिकरण13 (विद्यार्थी और अनुशासन 14 ('बसंत ऋतु 15 (महंगाई:- 16 (नारी शिक्षा 17 (राष्ट्रीय एकता18 (नशा मुक्ति 19 (मेरी प्रिय पुस्तक 20 (चुनाव प्रक्रिया 21 (मेरा प्रिय लेखक 22 (शरद ऋतु:- (आप हिंदी में निबंध खुद से लिख सकते है | निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखने का प्रैक्टिस करे।)

(व्याख्या करे) – 8 अंक (2 x4 =8) **1.प्रश्न:- तमचुर खग रोर सुनहु बोलत बनराई , ...** प्रस्तुत पद वात्सल्य भाव के हैं और सुरसागर से संकलित है जिसमे सूरदास जी मात्री स्नेह का भाव प्रदर्शित कर रहे हैं । माता यशोदा अपने पुत्र कृष्ण को सुबह होने पर जगा रही हैं । वह कहती हैं कि हे ब्रज के राज कुमार अब जग जाओ । सवेरा होने के प्रतिक मुर्गे बांग देने लगे हैं और पक्षियों व् चिरियो का कलरव प्रारम्भ हो गया है । गोशाला में गाय बछरो के लिए रम्भा रही हैं।

2.प्रश्न:- धानि सोई जस. . . . . बासू। प्रस्तुत पंक्तियां मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित महाकाव्य पद्मावत के अंश है जिसमे कवि कहते है कि वह पुरुष धन्य है जिसकी कीर्ति और प्रतिष्ठा इस संसार में है उसी तरह रह जाती है जिस प्रकार पुष्प के मुरझा जाने पर भी उसका सुगंध रह जाता है।

3.प्रश्न:- शीत न लग जाए, इस भय से नही गोद से जिसे उतारा,
छोर काम दौर कर आई , माँ कहकर जिस समय पुकारा।
प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता' पुत्र वियोग 'से ली गई है जिसमे उन्होंने एक माता के पुत्र खो जाने के बाद उसके मन की व्यथा का मार्मिक चित्रण किया है। वे कहती है कि वह पुत्र के प्रति हमेशा सचेत रहती है । वह अपने पुत्र को शीत न लग जाए इस भय से उसे गोदी से नही उतारती है । और पुत्र को एक बार माँ कहने पर कोई भी काम करती छोर दौर कर चली आती है

4.प्रश्न:- मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है
। . . . . .हट जाती है।
प्रस्तुत पंक्तियाँ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित कहानी' उसने कहा था 'से ली गई है। सूबेदारनी को दिए वचन कि पति और पुत्र की युद्ध में रक्षा करना- के इर्द- गिर्द कहानी घुमती है। लहना सिंह को गोली लग चुकी है। वजीरा सिंह सेवा कर रहा है। सूबेदार और बोधा सिंह गारी से पिछे दवा के लिए जा रहे है। लहना ने बोधा से कहा- सूबेदारनी से कहना – मुझसे जो उन्होंने कहा था , वह मैंने कर दिया है।लहना सिंह मृत्यु के कगार पर खरी है। मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म भर की घटनाए एक-एक करके सामने आती है। सारे दृश्यों के रंग साफ हो जाते है। समय की धुंध बिलकुल उन पर से हट जाती है।थोरी देर बाद लहना सिंह की मृत्यु हो जाती है। प्रेम की बलिवेदी पर लहना सिंह बलि चढ़ जाता हैं।

5.प्रश्न:- नील जल में या किसी की, गौर झिलमिल देह , जैसे हिल रही हो। और ....जादू टूटता हैं इस उषा का अब , सूर्योदय हो रहा हैं। प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'उषा' कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि **शमशेर बहादुर सिंह** हैं। कवि ने सूर्योदय से पहले के वातावरण का सुंदर चित्र उकेरा है। इसमें सूर्योदय का मनोहारी चित्रण किया गया है। कवि ने भोर के पल-पल बदलते दृश्य का सुंदर वर्णन किया है। वह कहता है कि सूर्योदय के समय आकाश में गहरा नीला रंग छा जाता है। सूर्य की सफेद आभा दिखाई देने लगती है। ऐसा लगता है मानो नीले जल में किसी गोरी सुंदरी की देह हिल रही हो। धीमी हवा व नमी के कारण सूर्य का प्रतिबिंब हिलता-सा प्रतीत होता है। कुछ समय बाद जब सूर्योदय हो जाता है तो उषा का पल-पल। बदलता सौंदर्य एकदम समाप्त हो जाता है। ऐसा लगता है कि उषा का जादुई प्रभाव धीरे-धीरे कम होता जा रहा है।

6.प्रश्न:- भगति विमुख जो धर्म सो सब अधर्म करि गाए। योग यज्ञ व्रत दान भजन बीनु तुच्छ दिखाए .... कबीर कानि राखर नहि, वर्णारम षट दर्शनी/
उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक दिगंत भाग 2 -के' छप्पय शीर्षक 'से ली गई है। इसके रचयिता नाभादास है। कबीर के भक्ति विमुख तथा कथित से ली गई है। इसके रचयिता कबीर दास है । कबीर ने भक्ति विमुख तथा कथित धर्मो की आलोचना की है। उन्होंने योग ,यज्ञ ,व्रत ,दान और भजन के महत्व का बार-बार प्रतिपादन करते हुए वास्तविक धर्म को स्पष्ट किया है। उन्होंने अपने सभी पदों में हिंदू और तुर्क सबके प्रति आदर भाव व्यक्त किया है। कबीर के वचनों में पक्षपात नहीं है ,उनमें लोकमंगल की भावना है। कबीर मुंहदेखी बात नहीं करते। उन्होंने वर्णाश्रम के पोषक घट -दर्शनों के अवगुणों को स्पष्ट किया है।

7.प्रश्न:- जहां मरू ज्वाला धधकती, चातकी कन को तरसी, उन्हीं जीवन घाटियों की, मैं सरस बरसात रे मन।
उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते है कि जहां मरुस्थल की गर्मी बरसती है और चातकी जल के लिए तरसती है, उन्हीं जीवन की घाटियों मे आश सरस बरसात बन जाती हूं अर्थात कवि यह कहना चाहते हैं कि जिन लोगों का जीवन मरुस्थल की सूखी घाटी के समान दुर्गम ,विषम और ज्वालामय हो गया है ,जहां चित् रूपी चातकी को सुख रुपी जल की एक बूंद भी नहीं मिलती हो उन्हें आशा की एक किरण मात्र मिल जाने से जीवन में रस की वर्षा होने लगती है।

8.प्रश्न:- चिर निराश नीरधर से, प्रतिच्छायित अश्रु-सर मे मधुप मुखर मरन्द-मुकुलित, मै सजल जलजात रे मन।
उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहना चाहते हैं कि मानव जीवन आंसुओं का एक सरोवर है, उसमें पुरातन निराश रूपी बादलों की छाया पड़ रही है। उस चातकी सरोवर में ऐसा एक ऐसा सजल कमल है जिस पर भवरे मंडराते हैं और जो मकरंद से परिपूर्ण है कवि की इन पंक्तियों में हृदय की अनुभूति, संगीत मधुरिमा कला की विद्वता, कला की विदग्धता सहज ही दृष्टिगोचर होता है।

9.प्रश्न:- थपकी दे दे जिसे सुलाया, जिसके लिए लोरियां गाई जिसके मुख पर जरा मलिनता देख आंख में रात बिताई। ऊतर:-पुत्र विछोह से दुखी कवयित्री को विगत की स्मृतियां झकझोर देती हैं। कवयित्री अपने पुत्र को थपकी देकर सुलाने का प्रयास करती थी। उसे लोरियां गाकर सुनाती थी। उसके मुख पर उदासी देखकर रात भर जगकर व्यतीत करती थी।

10.प्रश्न:- प्रात: नभ था-बहुत नीला, शंख जैसे भोर का नभ..................स्लेट पर या खड़िया चाक मल दी हो किसी ने। उत्तर:- प्रातः कालीन आकाश गहरा नीला प्रतीत हो रहा है। यह शंख के समान पवित्र और उज्जवल है। भोर के समय आकाश में हल्की लालिमा बिखर गई है। आकाश की लालिमा अभी पूरी तरह छटी भी नहीं पाई है, पर सूर्योदय की लालिमा बाहर निकलना चाह रही है। आसमान के वातावरण में जो नमी दिखाई दे रही है वह राख से लिया हुआ गीला चौका सा लग रहा है। उसमें उसकी पवित्रता झलक रही है। भोर का दृश्य काले और लाल रंग के अनोखे मिश्रण से भर गया है। ऐसा लगता है कि गहरी काली सील को कैंसर से अभी-अभी धो दिया गया हो अथवा काली स्लेट पर लाल खरिया मल दी गई हो।

11.प्रश्न:-आदमी यथार्थ को जीता नहीं यथार्थ को रचता भी है। उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति हमारे हिंदी साहित्य की पाठ्य पुस्तक के दिगंत के' हंसते हुए मेरा अकेलापन 'शीर्षक डायरी से लिया गया है। इसके लेखक मलयज है। इस वाक्य में कवि कहते हैं कि आदमी यथार्थ में जीता नहीं बल्कि यथार्थ को रचता भी है। क्योंकि यथार्थ एक कटु-सत्य है और यथार्थ से परे जीवन बेकार है। क्योंकि परिवार समाज ही व्यक्ति की समस्या हो पर समाधान भी यही है।

12.प्रश्न:-"आदमी भागता है, तो जमीन पर वह सिर्फ अपने पैरों का निशान नहीं छोड़ता, बल्कि प्रत्येक निशान के साथ धूल में अपनी गंध भी छोड़ जाता है"। उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी साहित्य की पुस्तक दिगंत के' तिरिछ ' शीर्षक से लिया गया है ,जिसके लेखक' उदय प्रकाश 'है। कवि इन पंक्तियों में कहते हैं कि तिरिछ में काले नाग से 100 गुणा जहर ज्यादा होता है ,क्योंकि सांप तब काटता है ,जब उसके शरीर पर पैर पड़ता है ,पर मानव तो पीछा ही पड़ जाता है ,क्योंकि उसमें भागने के लिए टेढ़ा मेढ़ा-चक्कर लगाता है ,पर अपने पद-चिन्ह के साथ अपने शरीर पर गंध भी छोड़ जाता है।

13.प्रश्न:-"भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म कहि गए"। उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति हमारे हिंदी साहित्य की पाठ्य पुस्तक के दिगंत के काव्य खंड के' छप्पय 'शीर्षक से लिया गया है ,जिसके लेखक' नाभादास 'है। इस पद में कवि कहते हैं इस संसार में जितने भी धर्म ,कर्म व्यक्ति को ईश्वर की सच्ची भक्ति से दूर करती है तथा उसे मन को भटकाती है तथा कबीरदास सबको अधर्म की श्रेणी में रखकर उसकी आलोचना करते हैं।

14.प्रश्न:-पूरब पश्चिम से आते हैं......................उसमे कौन लगाता है? उत्तर:-प्रस्तुत पंक्ति हमारे साहित्य की पाठ्य पुस्तक के दिगंत के काव्य खंड के' अधिनायक 'शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके लेखक' रघुवीर सहाय ' हैं। इसमें कवि समाज में फैली अव्यवस्था का विरोध किया है। कवि लोकतंत्र पर प्रहार करते हुए लिखते हैं कि चारों ओर भूख एवं चित्कार है जहां एक ओर लोगों को खाने के लिए अन्न व पहनने के लिए वस्त्र नहीं है वहीं कुछ लोग सत्ता पर कुंडली मार बैठकर शासन चला रहे हैं।

15.प्रश्न:-"और अब घर जाओ तो कह देना कि मुझे जो उसने कहा हम वह मैंने कर दिया"। उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति हिंदी साहित्य की पाठ्यपुस्तक के दिगंत के' उसने कहा था 'शीर्षक कहानी से लिया गया है ,इसके लेखक 'चंद्रधर शर्मा गुलेरी 'है। यह वाक्य लहना सिंह उस समय कहता है जब युद्ध में वजीरा सिंह एवं बोधा सिंह की रक्षा करते हुए स्वयं घायल हो जाता है तथा बेहोशी में ही अपनी प्रेयसी की विनम्रता व इच्छा याद करते हुए वजीरा सिंह से कहता है कि अब घर जाओ तो कह देना कि मुझे जो उसने कहा था उसे मैंने पूरा किया।

16. प्रश्न:- जिस पुरुष में नारीत्व नहीं अपूर्ण है। उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति हमारे हिंदी साहित्य की पाठ्य पुस्तक के दिगंत के' अर्द्धनारीश्वर 'शीर्षक निबंध से लिया गया है। इस वाक्य में रामधारी सिंह दिनकर कहते है कि पुरुषत्व में पूर्णता के लिए नारीत्व के गुण का होना आवश्यक है ,क्योंकि कोमल ,मधुरता ,दयालु ,सहायता आदि ये गुण वास्तव में नारी के हैं ,अतः पूर्ण मनुष्य के लिए उसमें यह गुण होना आवश्यक है।

17. प्रश्न:- मेरे भैया मेरे बेटे अब. . . . . मन समझाना। प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता' पुत्र वियोग 'से ली गई हैं जिसमे उन्होंने एक माता के पुत्र खो जाने के बाद उसके मन की व्यथा का मार्मिक चित्रण किया है । कवयित्री अपने पुत्र को याद करते हुए कहती है कि मैं अपने पुत्र को अगर एक पल के लिए भी पा लेती तो उसे समझाती कि वह कभी मुझे छोरकर न जाए । माँ के लिए अपने बेटे को खोकर अपने मन को सांत्वना देना बरा ही कठिन होता है।

18. प्रश्न:- जिन पर है वे सेना के साथ ही जीतकर लौट रहे है। प्रस्तुत पंक्तियाँ' हार – जीत 'शीर्षक कविता से ली गई हैं जिसके रचनाकार' अशोक वाजपेयी 'है | इन पंक्तियों में कवि ने राजनीतिक झूठ को उजागर किया है | लेखक के अनुसार शासक और सताधारी वर्ग कभी भी अपनी हार की घोषणा नहीं करता है | वह अपनी हार को भी विजय के रूप में प्रस्ततु करता है तथा जनता को यह स्वीकार करने के लिए विवश करता है कि वह उसे बलवान और समर्थवान समझे |

19.प्रश्न:- निमोनिया से मरने वाले को मुरब्बे नही मिला करते। प्रस्तुत पंक्तियाँ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित कहानी' उसने कहा था 'से ली गई है जिसमे वजीरा सिंह लहना सिंह को सलाह देता है कि तुमको ठंड से बचना चाहिए । जाड़ा मौत की तरह है और अगर तुम मर गए तो तुम्हे अपनी जमीन तक नसीब नहीं होगी । वजीरा सिंह कहता है की निमोनिया की बीमारी में करवी औषधि दी जाती है मुरब्बे नहीं ।

20. प्रश्न:- राष्ट्रगीत में भला कौन वह , भारत – भाग्य विधाता है , ...गाता है। प्रस्तुत पंक्तियाँ रघुवीर सहाय द्वारा लिखित कविता' अधिनायक 'से ली गई है जिसके माध्यम से कवि कहते है कि पता नही राष्ट्रगीत में वह भाग्य विधाता कौन है जिसका गुणगान फटा सुथन्ना पहने हरचरना कर रहा है । इस लोकतान्त्रिक व्यवस्था में भी पता नही किसका गुणगान किया जा रहा है।

21.प्रश्न:- आज दिशाएं भी हंसती है , है उल्लास विश्व. . . . . पास न आया।
प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता' पुत्र वियोग 'से ली है जिसमे उन्होंने एक माता के पुत्र खो जाने के बाद उसके मन की व्यथा का मार्मिक चित्रण किया है। कवयित्री कहती है कि आज चारो ओर खुशी का वातावरण है और सारे संसार में खुशियाँ छाई है लेकिन ये खुशियाँ मेरे लिए व्यर्थ है क्योकि मेरा खोया हुआ पुत्र अब तक मुझे प्राप्त नही हुआ । अर्थात कवयित्री के पुत्र का निधन हो गया है।

22.प्रश्न:- लागति लपकि कंठ. . . . . माल को । प्रस्तुत पंक्तियाँ भूषण द्वारा रचित' कवित 'शीर्षक पाठ से ली गई है जिसमे भूषण ने छत्रसाल की वीरता , धीरता और पौरुष का वर्णन किया है कवि कहते है कि हे राजन आपकी तलवार शत्रुओ के गर्दन से नागिन की तरह लिपट जाती है और शिव को प्रसन्न करने के लिए उन्हें मुंडो की माला अर्पित कर रही है।

23.प्रश्न:- कितने क्रूर समाज में रह रहे है हम. . . . .यह सब । जुठन प्रस्तुत पंक्तियाँ जूठन से लिया गया है जिसके लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि है। इन पंक्तियों में लेखक ने समाज के विपदाओ पर कटाक्ष किया है ।

24.प्रश्न:- की हर वो आदमी. . . . . लोहा। प्रस्तुत पंक्तियाँ विनोद कुमार शुक्ल द्वारा रचित कविता' प्यारे नन्हे बेटे को 'से ली गई है । कवि कहते है कि हर वो आदमी जो अपनी जीविका के लिए हर विषम परिस्थितियों में , गर्मी ,सर्दी , बरसात में कठिन परिश्रम करता हैं , वो भी लोहा के समान ही है । हर वो औरत जो अत्याचार सहकर भी अपने दुखो को झेल रही है , वो भी लोहा के समान है ।

25.प्रश्न:- धनि सो पुरुष जस कीरति जासू . . . . बासु।। जायसी कहते है कि वह पुरुष धन्य है , जिसकी कीर्ति अमर होती है । फूल मर जाता है , मुरझा कर नष्ट हो जाता है , लेकिन उसकी सुगंध याद रहती है ।

26.प्रश्न:- कलि कराल दुकाल दारुन , सब कुभांति कुसाजु। नीच जन , मन उंच जैसी कोढ़ में की खाजु।।
तुलसीदास युग के बारे में कहते हैं कि यह कलियुग विकराल है । यह कष्ट देनेवाला है । यह अव्यस्थित है। नीचे विचारो वाले लोग ऊँची- ऊँची बाते करते हैं । ये कोढ़ में खाज की तरह कष्ट देनेवाले लोग हैं।

27.प्रश्न:- प्रतिभट कटक कटीले केते काटी काटी ,कालिका सी किलकि कलेऊ देत काल को।
छत्रसाल की तलवार की प्रशंसा करते हुए कवि कहता है कि उसकी धार बरी तीक्ष्ण है । वह कांटेरूपी शत्रु -दल को काट डालती है । काट कर रणचंडीका काली को मानो कलेवा चढ़ाती है । छत्रसाल तलवार युद्ध में निपुण थे । जब शौर्य संपन्न छत्रसाल म्यान से तलवार निकालकर शत्रु- दल पर वार करते हैं तो वह प्रलय सूर्य की किरण की तरह सघन अरिगज समूह के अंधकार को फार डालती हैं।

28.प्रश्न:- बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही । प्रस्तुत पंक्तियाँ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित कहानी' उसने कहा था 'से ली गई है जिसमे घोड़े के माध्यम से सैनिक के जीवन में युद्ध के महत्त्व को बताया गया है ।यदि घोड़े से बहुत दिनों तक कार्य नहीं करवाया जाए तो उसे उन कार्यो को करने में परेशानी होती है इसलिए घोड़े को फेरना अर्थात उस से कार्य लेना आवश्यक होता है उसी प्रकार यदि सैनिक से युद्ध का अभ्यास नहीं कराया जाए तो वह युद्ध से विमुख हो सकता है। इसलिए ठीक ही कहा गया है बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही ।

29. प्रश्न:- सच है जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता । प्रस्तुत पंक्ति बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित' बातचीत 'शीर्षक निबंध से ली गई है। इस पंक्ति में लेखक ने बातचीत के महत्व को बताया है। लेखक कहते है कि मनुष्य के बोलने से ही उसका गुण – दोष प्रकट होता है । बिना बोले व्यक्ति के भीतर छुपे विचारो का पता ही नहीं चलता । वह अच्छा है या बुरा यह बात उसके बोलने के बाद ही जाहिर होती है ।

30.प्रश्न:- यदि संधि कुंती व् गांधारी में होता तो युद्ध न होता । कौरवो की सभा में संधि वार्ता दुर्योधन और कृष्ण के बीच हुई जो असफल हो गई। यह संधि वार्ता यदि कुंती और गांधारी के बीच हुई होती तो बहुत संभव था कि महाभारत न मचता । स्त्रियां आगामी वैधव्य के डर से महाभारत से दूर रहती।

31.केवल कुछ दुखो से बचने के लिए अपने जीवन को समाप्त कर देना कायरता है। प्रस्तुत पंक्तियां एक लेख और एक पत्र शीर्षक पाठ से संकलित है | सुखदेव को लिखे अपने पत्र में भगत सिंह कायरता को परिभाषित करते हुए कहते है कि जीवन अमूल्य है | मनुष्य जीवन में सबसे अधिक दुखो , कष्टों और पीराओ से डरता है | वह दुखो , कष्टों और पीराओ से बचने के लिए जीवन को समाप्त कर देता है | यह लेखक की नजर में सबसे बरी कायरता है | व्यक्ति को सिर्फ दुखो से बचने के लिए आत्महत्या नही करनी चाहिए | हां , यदि हमारे प्राण त्याग से देश में समाज अथवा मानवता का कल्याण होता है तो व्यक्ति को प्राणों का बलिदान करने में तनिक भी संकोच नही करना चाहिए |

32. व्यक्ति से नही हमे तो नीतियों से झगरा है , सिधान्तो से झगरा है , कार्यो से झगरा है। प्रस्तुत पंक्तियाँ सम्पूर्ण क्रांति शीर्षक भाषण से ली गई है | पटना के गांधी मैदान में अपने भाषण के दौरान जय प्रकाश नारायण कहते है कि मुझे किसी भी व्यक्ती से झगरा नही है | मुझे विरोध उसकी गलत नीतियों और सिधान्तो से है | वे कहते है कि व्यक्ति की लराई छोटे लोग लरते है जयप्रकाश नारायण जैसे नेता नहीं | यदि नीतियां सिधांत और कार्य वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना में बाधक थी तो जयप्रकाश नारायण ने हमेशा उनका विरोध किया है | जयप्रकाश नारायण कहते है कि व्यक्ती कितना भी महान या बरा क्यों ना हो यदि वह गलत नीतियों और गलत सिधान्तो का पालन करता है तो जयप्रकाश ने हमेशा उसका विरोध किया है |

33. वैसे धीरे- धीरे मैंने अनुभवों से यह जान लिया था कि आवाज ही येसे मौके पर मेरा सबसे बरा अस्त्र है |
प्रस्तुत पंक्तियाँ तिरिछ शीर्षक कहानी से ली गई है जिसके रचयिता उदय प्रकाश जी है | उन्होंने इसके माध्यम से सामाजिक विषमता को दिखाया है |तिरिछ समाज में व्याप्त मूल्यहीनता और सामाजिक विषन्नता है | इन पंक्तियों में लेखक ने आवाज की महत्व की चर्चा की है | तिरिछ लेखक का पीछा कर रहा है | उसी प्रकार समाज में छल , प्रपंच ढोंग , पाखंड तिरिछ की भांती समाज का पीछा कर रही है | तिरिछ से छुटकारा पाने के लिए उसे मारना ही उचित है इसी प्रकार सामाजिक विकृतियों के खिलाफ डट जाना ही उचित है | आवाज ही मनुष्य का एक मात्र हथियार है |

Long Questions :- 3 X 5= 15 अंक

1. 'उषा'शीर्षक कविता का सारांश / भावार्थ-: प्रस्तुत कविता 'उषा' में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित होने वाली प्रकृति का शब्द-चित्र उकेरा है। कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है। कवि भोर की आसमानी गति की धरती के हलचल भरे जीवन से तुलना कर रहा है। इसलिए वह सूर्योदय के साथ एक जीवंत परिवेश की कल्पना करता है जो गाँव की सुबह से जुड़ता है-वहाँ सिल है, राख से लीपा हुआ चौका है और स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हे हाथ हैं। कवि ने नए बिंब, नए उपमान, नए प्रतीकों का प्रयोग किया है। कवि कहता है कि सूर्योदय से पहले आकाश का रंग गहरे नीले रंग का होता है तथा वह सफेद शंख-सा दिखाई देता है। आकाश

bsebcareer.com

का रंग ऐसा लगता है मानो किसी गृहिणी ने राख से चौका लीप दिया हो। सूर्य के ऊपर उठने पर लाली फैलती है तो ऐसा लगता है जैसे काली सिल को किसी ने धो दिया हो या उस पर लाल खड़िया मिट्टी मल दिया हो। नीले आकाश में सूर्य ऐसा लगता है मानो नीले जल में गोरी युवती का शरीर झिलमिला रहा है। सूर्योदय होते ही उषा का यह जादुई प्रभाव समाप्त हो जाता है।

2.' हार -जीत ' शीर्षक कविता का सारांश /भावार्थ -: प्रस्तुत गद्य कविता अशोक वाजपेयी के कविता संग्रह 'कहीं नहीं वहीं' में संकलित है।कवि ने साहित्य के नवीनतम विधा में युद्ध से विजय प्राप्त कर के लौट रहे सेना और शासक के स्वागत में नागरिक के जश्न की कल्पना की है। नागरिक जो विजयपर्व में व्यस्त हैं, वास्तव में उन्हें युद्ध के कारण, परिणाम और मूल घटना की कोई जानकारी नहीं है। और नाहीं नागरिकों ने इसे जानने में रुचि दिखाई है। उन्हें लगता है की 'उनकी' जीत हुई है लेकिन यहाँ 'उनकी' के भाव पर कवि सवाल खड़े करता है। वो बस नाचने-गाने में मस्त है। एक मशकवाला कहता है कि हर युद्ध की जीत के साथ आम नागरिकों की हार होती है। इसे भी जीत मत समझो ये बाजे गाजे के साथ जीत नहीं अपितु तुम्हारी हार आ रही है।अंतिम पंक्तियों में कवि गहरे अर्थ को धारण कर लेता है और कहता है कि अच्छा हुआ इस मशकवाले का काम सिर्फ सड़कों को पानी देना है, नहीं तो यह इस विजयपर्व में खलल डाल रहा होता।और अच्छा है कि इसे सच बोलने और दर्ज कराने का अधिकार नहीं दिया गया क्योंकि जिनको ये काम दिया गया है वो खुद शासक और सेना के साथ उनके उत्सव में मस्त हैं। आम नागरिक जिन पर भरोसा करते है की वे शासक को निरंकुश होने से रोकेंगे और उनकी आलोचना करेंगे अब उसी शासक के हर निर्णय में वो उनके साथ है और चाटुकारिता से शासक को खुश करने में लगा है। आप वर्तमान मीडिया के उदाहरण से समझ सकते हैं।साथ ही कवि एक गंभीर प्रश्न दर्ज करवाता है, ये कह कर कि समाज के निचले पायदान पर जीने को मजबूर किसी आम नागरिक को उस मशकवाले की तरह शासक से सवाल पुछने का आज भी अधिकार नहीं दिया गया है।या जब वे सवाल पुछने या दर्ज करवाने का प्रयास करते भी हैं तो उसी जश्न वाली भीड़ की तरह सभी बिना ध्यान दिए आगे निकल जाते हैं।कहने का तात्पर्य है कि हम एक भीड़ की शक्ल में सत्ता की तरफदारी में इतने मस्त हो गए हैं।

3.'प्यारे नन्हें बेटे को /शीर्षक कविता का सारांश 'भावार्थ -: 'प्यारे नन्हें बेटे को' कविता विनोद कुमार शुक्ल के कविता संकलन "वह आदमी नया गरम कोट पहन कर चला गया विचार की तरह" से लिया गया है।कविता को दो खंडों में बाँट सकते है, पहले खंड में लोहा एक भौतिक वस्तु है।दूसरे खंड में वह प्रतिकात्मक ढंग से मेहनतकश) मजदूर (और दबाई और सताई गई औरत का रूप ले लेता है।लोहा कर्म का प्रतीक हो जाता है। घर-गृहस्थी और जीवन का आधार हो जाता है।प्रस्तुत कविता का नायक अपने छोटे बेटे को कंधे पर बैठा अपनी बेटी से पूछता है की आस-पास कहाँ-कहाँ लोहा है? नायक का बेटा छोटा है और जब उसे कंधे पर बैठाया जाता है तो वो बड़ी मासूमियत से कहता है, अब मैं दादा से भी बड़ा हो गया। बिटिया अपने आस-पास नजर दौड़ाती है और कहती है चिमटा में, कारकुल) करछुल (में , सिगड़ी) कराही (में, समसी) संड़सी (में,दरवाजे की सांकल) जंजीर जिस से दरवाजे को फंसाया जाता है (में, कब्जा में और खीला) कील, कांटी (में लोहा है।छोटी बच्ची रुक के फिर याद करती है और कहती है बाहर लकड़ी के दो खंभो पर बंधे जिस लंबे तार पर कपड़ा सुखाया जाता है वो भी लोहा है।साथ ही सेफ्टी पिन और साइकल भी लोहा है।नायक की बेटी दुबली-पतली है लेकिन दिमाग से तीक्ष्ण है जैसे ही पिता का सवाल सुनती है जल्दी-जल्दी जवाब खोजने लगती है।अब नायक अपनी बेटी को और बतलाता है... फावड़ा में भी लोहा है। उसके साथ कुदाल में, टँगिया में, बसुला) लकड़ी छिलने वाला यंत्र (और खुरपी में भी लोहा है। और वहाँ जो बैलगाड़ी है, उसके पहिये में भी लोहा है। बैल के गले में जो काँसे की घंटी टंगी है उसके अंदर भी लोहे की ही गोली लगी है।जाहीर है ये सभी यंत्र किसान-मजदूर के काम आती है।इसलिए ये कर्मठता का आधार है।अब बारी नायक की पत्नी की है अर्थात अब बच्ची की माँ उसे बतलाती है... बाल्टी में और सामने के कुएं की घिरनी में भी लोहा है।

4' अधिनायक' शीर्षक कविता का सारांश /भावार्थ-: रघुवीर सहाय ने अपने काव्य के मध्य से साधारण व्यक्तियों के ऊपर हो रहे अन्याय और शोषण को दर्शाने का प्रयास किया है, अपनी व्यंग भाषा के साथ कवि ने गरीबों के प्रति अपनी प्रगतिशील विचारधारा का परिचय दिया है । प्रस्तुत कविता मे कवि ने यह दर्शाया है कि आजादी के बाद गरीबों की दयनीय दशा मे सुधार क्यों नहीं आया है, वह पहले भी दुखी था आज भी दयनीय स्थिति में जीने के लिए बाध्य है। देश के शासक लोगों के ऊपर कवि ने व्यंग किया है। इस कविता का मुख्य उद्देश्य शासक वर्ग के आचरण को दिखाना हैं रघुवीर सहाय प्रयोगवादी कवि है। राष्ट्रीय राजनीतिक घमासान में पीस रहे आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त करते है,रघुवीर सहाय अधिनायक कविता के माध्यम से इस पीड़ा का व्यक्त करने का प्रयास किया है। कभी कहता है जिस राष्ट्रगीत का हम गान करते हैं उसमें कौन है, जो हमारा भाग्य विधाता है ? हमारे भाग्य को बनाने वाला या हमें जीवन दान देने वाला कौन है, कवि कहता है कि कोई हमें यह तो बताइए कि हमारे भाग्य का विधाता या रखवाला कौन है? कवि ने साधारण जनता के जीवन की दशा को देखकर नेता और शासक पर व्यंग किया है यह गरीबों के मुंह से ही अपनी जय जयकार करवाते हैं, और गरीब करते हैं क्योंकि उन्हें करना है। कवि ने व्यंग भाषा का प्रयोग करके नेताओं और जनसाधारण के बीच के सामान्य दूरी का वर्णन किया है। इस काव्य में राष्ट्रगान से महत्वपूर्ण कवि ने राष्ट्रीय भावना को माना है। लोकतंत्र में चुने गए प्रतिनिधि अपने आप एक तानाशाह की भूमिका में है भारतीय संविधान में लोकतांत्रिक सत्ता जनता के हाथ में है।लेकिन यहां के नेताओं ने उसको दोयम दर्जे का साबित कर दिया है। यहां की जनता दयनीय स्थिति में है और नंग धड़ंग पड़ी हुई है जिसके पास कोई भी संसाधन आवश्यकतानुसार नहीं है। यहां का हर व्यक्ति जो राष्ट्रीय गीत गाता है राष्ट्रगान को गाता है लेकिन राष्ट्रीय के संसाधनों से कोसों दूर पड़ा हुआ है। कवि के मन में राष्ट्रगीत को लेकर एक उदासीनता का भाव स्पष्ट रूप से दिखता है वह देश को संपन्न तथा खुशहाल रुप में देखना चाहता है,परंतु वह इसकी जगह दुख, दयनीय स्थिति, विपन्नता ही पाता है जो उसके मन की पीड़ा को व्यक्त करता है आज चारों तरफ आजादी के बाद भी गरीबी का साम्राज्य ही देखने को मिलता है ,कवि कहता है कि गरीब के पास आज भी तन ढकने के लिए पर्याप्त कपड़ा नहीं है, पेट को भरने के लिए दो वक्त का भोजन उपलब्ध नहीं है,भूखे पेट सोने को मजबूर उसके रहने के लिए ढंग का घर नहीं है। समाज को हाशिए पर धकेल दिया गया है इस काव्य में भी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर व्यंग किया गया है। जो राष्ट्रीय की कपोल कल्पना को आईना दिखा रहा है जो अधिनायक शक्तिशाली है, वह जनता को डर में जीने के लिए मजबूर कर रहा है तभी तो गाना ढोल बजवाता हैं और अपने प्रचार में सहयोगी बनाता है इस देश में सभी लोग हरचरना के पर्याय बन गए हैं।

5' सिपाही की माँ' का सारांश लिखे -: Ans:- प्रस्तुत एकांकी "सिपाही की माँ " मोहन राकेश द्वारा लिखी पुस्तक "अंडे के छिलके तथा अन्य" से लिया गया है| इसमे माँ, बेटे और बेटी से जुरी एक मार्मिक घटना का वर्णन है। बेटा अपने परिवार का ईकलौता पुत्र है। उसकी बहन जवान हो चुकी है। बेटे तथा माँ को उसकी शादी की चिंता है। खानदान का एक मात्र दीपक रुपया कमाने के लिए फौज में भर्ती होता है। वह फौज में वर्मा में लड़ रहा होता है। यह घटना दूसरा विश्व युद्ध की होती है और माँ को यह पता नहीं होता है की वर्मा कितनी दूर है और उस भयानक युद्ध का परिणाम क्या होगा उस बेटी को भी पता नहीं होता है जो माँ के साथ साये की तरह रहती है। वह भी इन वास्तविकताओ से अपरिचित होती है ।माँ और बहन को यह उम्मीद होती है की भाई जब पैसे कमा कर आएगा तो बहन के हाथ पीले करेगा। उन दोनों को युद्ध के भयावहता की जानकारी नहीं होती और वे रोज डाकिया की राह देखती है। इस युद्ध में उसका भाई मारा भी जा सकता है इसकी उसको कल्पना भी नहीं होती है माँ और बेटी आशाओं के डोर में बंधी अपना जीवन बिता रही होती है। अज्ञानता आशा और उम्मीदों को बलवान बनाती है। माँ और बेटी के हृदय में इस समय यही बात होती है। लेखक ने इस घटना के उतार-चढ़ाव का बखूबी वर्णन किया है।

6' बातचीत' शीर्षक निबंध का सारांश -: प्रस्तुत कहानी 'बातचीत' के लेखक महान पत्रकार बालकृष्ण भट्ट है। बालकृष्ण भट्ट का आधुनिक हिंदी गद्य के निर्माताओं में नाम आता है। बालकृष्ण भट्ट जी बातचीत निबंध के माध्यम से मनुष्य की ईश्वर द्वारा दी गई अनमोल वस्तु वाकशक्ति का सही इस्तेमाल करने को बताते हैं। महान लेखक बताते हैं कि यदि मनुष्य में वाकशक्ति न होती तो हम नहीं जानते कि इस गूंगी सृष्टि का क्या हाल होता। सब लोग मानो लुंज-पुंज अवस्था में एक कोने में बैठा दिए गए होते। लेखक बातचीत के विभिन्न तरीके भी बताते हैं। जैसे घरेलू बातचीत मन रमाने का ढंग है। वे बताते हैं कि जहां आदमी की अपनी जिंदगी मजेदार बनाने के लिए खाने-पीने चलने फिरने आदि की जरूरत है उसी प्रकार बातचीत की भी अत्यंत आवश्यकता है। हमारे मन में जो कुछ गंदगी या धुआ जमा रहता है वह बातचीत के जरिए भाप बनकर हमारे मन से बाहर निकल पड़ता है| इससे हमारा चित्त हल्का और स्वच्छ हो जाता है| हमारे जीवन में बातचीत का भी एक खास तरह का मजा होता है| यही नहीं भट्ट जी बताते हैं कि जब मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण दोष प्रकट नहीं होता है| महान विद्वान वेन जॉनसन का कहना है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का सही साक्षात्कार हो पाता है| वे कहते हैं कि चार से अधिक की बातचीत तो केवल राम रामौवल कह लाएगी| यूरोप के लोग को बातचीत का हुनर है जिसे आर्ट ऑफ कन्वर्सेशन कहते हैं| बालकृष्ण भट्ट उत्तम तरीका यह मानते हैं कि हम वह शक्ति पैदा करें कि अपने आप बात कर लिया करो|

7'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता का सारांश /भावार्थ -: **'तुमुल कोलाहल कलह में'** कविता हिंदी के प्रसिद्ध कवि **जयशंकर प्रसाद** द्वारा रचित कविता है। इस कविता के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि नित्य चंचल रहने वाली चेतना जब बेचैन होकर नींद के पल को खोजती है और थककर अचेतन होने लगती है, उस समय नींद के लिए बैचेन शरीर को मादक और स्पर्श सुख के मंद मंद झोंके जो आनंद के रस की बरसात करते हैं, उनका वर्णन नही किया जा सकता। जब मन चिर विषाद में विलीन हो जाता है चारों तरफ अंधकार छाया होता है, तब उसके लिए ऊषा की सी ज्योति रेखा एक खिला हुआ प्रातःकाल है। इसलिए कवि इस कविता के माध्यम से कवि दुख में भी सुख की किरणों को खोज लेता है। कवि के अनुसार यह जीवन रेगिस्तान की तपती भूमि के समान है .जहां मन रूपी चातक जल की एक-एक बूंद के लिए तरसता है। विषम परिस्थितियों वाले जीवन में मरुस्थल की वर्षा के समान परम सुख का आनंद खोजना ही कविता का मुख्य भाव है। कवि के अनुसार जीवन आँसुओं का तालाब है जिसमें निराशा रूपी बादलों की छाया निरंतर पड़ती रहती है और इस निराश आँसू भरे तालाब में आशा रूपी एक कमल भी खिला है, जिस पर भैंरे मंडरा रहे हैं जो कि मकरंद से भरे हुए हैं और आशा का प्रतीक हैं। कवि का इस कविता के माध्यम मुख्य भाव निराशा में भी आशा खोजना है।

8कवित्त का सारांश -: भूषण हिंदी कविता में रीतिकाल के एक प्रसिद्ध कवि है जिनका हिंदी जनता में बहुत संमान है। शिवाजी ने अपने युद्ध से औरंगजेब को बेहद परेशान कर रखा था । दक्षिण भारत मे उनकी धाक जम गई थी। भूषण का केन्द्रीय वर्ण्य- विषय यही है । भूषण कवि कहते है कि जिस तरह इंद्र का यम पर , वन्वाग्नी का समुद्र के जल पर, रघुकुलराज रामचंद्र का अंहकारी रावण पर, पवन का बादल पर, शम्भू का कामदेव पर , परशुराम का सहस्रबाहु पर, दवाग्नि का जंगल पर , चीता का मृगो के झुण्ड पर , मृगराज का हाथी पर , प्रकाश का अंधकार पर और कृष्ण का कंस पर आधिपत्य होता है , उसी प्रकार शिवाजी महाराजारुपी सिंह का आधिपत्य म्लेच्छ वंश पर है।

9'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता का सारांश /भावार्थ -: 'जन-जन का चेहरा एक' गजानन प्रसाद मुक्तिबोध की कविता है। कवि अपनी कविता से दुनिया भर में संघर्षरत सम्पूर्ण मानव जाति में एकता स्थापित करता है। मानव चाहे जिस देश, प्रदेश या नगर का हो, सबों का चेहरा अर्थात सबों की प्रवृति एक जैसी है। कवि दुनिया भर के शोषित जनता के अधिकारों के संघर्ष की कहानी को एक जैसा बताता है। जिस प्रकार दुनिया के किसी भी गली में पड़ने वाली धूप एक है, पीड़ा और दर्द से चेहरे पर पड़ी हुई झुरियां एक है, उसी प्रकार सभी मनुष्यों का संघर्ष एक ही है। वो संघर्ष सामंती ताकतों से आजादी के लिए है। पूरी दुनिया में क्रांति के लिए प्रेरित और अधिकार की लड़ाई में शामिल सभी बँधी हुई अर्थात एकत्रित मुठ्ठियों का लक्ष्य एक है। पृथ्वी के चारों ओर बस रहे जन-जन का दल एक है और पक्ष एक है। लाल रंग का एक सितारा हिंसा और सामंती ताकतों से भयानक रूप धारण किए हुए है और एक ही इशारा कर रहा है। कवि नदियों के वेदना की बात करते हुए लिखते हैं की नदियाँ अब अकुला गई हैं और अब वेदना से एक-सा हीं गाने लगी हैं। प्रेम, क्रोध और जिंदगी की धारा भी एक ही है।पृथ्वी के प्रसार के साथ अपने ही सेना से किए हुए गिरफ्तार और शोषक वर्ग की फैली हुई गहरी काली छायाँ और पहाड़ सा खड़ा उनका विकराल रूप और उनके काले दुर्ग सब एक ही है। उसी प्रकार समस्त मानव का शोषक एक ही है।यहाँ कवि लोगों के बौद्धिक जागरण की बात कर रहा है। लाल-लाल किरणों से अंधकार को चीरती हुई आशा की किरण एक है क्योंकि मित्र का स्वर्ग एक अर्थात प्रकृति की नजर में सब एक है और हरेक व्यक्ति का मित्र भी एक ही है जो की सर्वव्यापी है।समस्त जनता इन सामंती ताकतों को उखाड़ फेकने के लिए क्रांति के लिए प्रेरित हैं। उन सबों के लिए अब ज्ञान का विराट प्रकाश और सत्य का उजाला भी एक ही है। लाखों लोगों के पैर में लगी मोच का दर्द का श्रोत एक ही है। अर्थात सभी एक ही ताकत से आतंकित है और सबों के दिल में हिम्मत और संघर्ष का एक ही सितारा जल रहा है। दुनिया के सभी देशों में रहने वाले लोग भारत की संस्कृति से प्रभावित हैं। यहाँ हर तरफ कन्हैया ने गायें चराई है और आपस में सबमें भाई और बहन की भावना है। कृष्ण के बंसी बजाने और गाय चराने की उनकी स्मृति आज भी याद है।दुनिया भर में दानव और दुरात्मा की शक्तियाँ एक हो गई है। सारे मानव की आत्मा एक ही है। शोषक, खूनी, हत्यारा और जन-जन के ऊपर शोषण का तलवार लेकर खड़ी ताकत भी एक ही है। दुनिया के किसी भी हिस्से में रहने वाले मानव के प्रति एकरूपता को बनाए रखने की कवि की आशा दिखलाई पड़ती है। कवि के अनुसार सभी जनता के अधिकारों को एक ही शक्ति ने दमित किया है इसलिए सभी जनता को अपनी विभिन्नता को भुला कर एकजुट होना पड़ेगा।

10' अर्द्धनारीश्वर शीषर्क 'निबंध का सारांश लिखे। -: 'अर्द्धनारीश्वर' शीर्षक राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित एक समाजिक निबंध है । इसमें वे लिखते हैं कि नर एवं नारी सभी एक समान है , यदि नर में नारी का या नारी में नर का गुण आ जाये तो उनकी मर्यादा कम नही होती बल्कि उनके पूर्णता में वृद्धि होती है लेकिन दिनकर जी को यह दृश्य संसार में नही दिख रहा है , इसलिए वे दुखी है ।उनका मानना हैं कि संसार में सर्वत्र पुरुष-पुरुष एवं नारी- नारी है ।नारी का मानना है कि यदि वे पुरुष का गुण सीखेंगे तो उनके नारीत्व में बट्टा लग जायेगा ।इसी तरह पुरुष सोचते है कि स्त्री का गुण धारण करके वे स्ट्रेन कहलायेंगा । कवि इस विभाजन से बारा दुखी है । कवि का मानना है कि परमात्मा ने धूप एवं चांदनी में बटंवारा नहीं किया तो हम कौन होते हैं ,बाँटने वाले व्यक्ति की इस सोच के कारण सभी अपने घर में ही गुलाम हो गई है ,आज यह उपयोग की वस्तु बनकर रह गई है । दिनकर का मानना है कि नर एवं नारी एक ही पदार्थ से बनी दो प्रतिमायें हैं , अतः कवि कहते कि जब तक नर - नारी अलग रहेंगे तब तक वे अधूरे रहेंगे ।

11'ओ सदानीरा' शीर्षक निबंध का सारांश लिखे । 'ओ सदानीरा' शीर्षक निबंध के निबंधकार जगदीशचंद्र माथुर है ।यह निबंध गंडक नदी को निमित बनाकर लिखा गया है पर उसके किनारे की संस्कृति और जीवन प्रवाह की अन्तरंग झांकी पेश करता हुआ जैसे स्वयं गंडक की तरह ही प्रवाहित होता दिखलाई परता है ।गंडक चंपारण मे बहने वाली नदी है ।यह नदी अपना बहाव क्षेत्र और रास्ता बदल लिया करती है ।गौतम बुद्ध के समय घना जंगल था, वृक्षों की जरो में पानी रुका रहता था । बाढ आती थी पर इतनी प्रचंड नही । पिछले 6- 7सौ साल में महावन, जो चंपारण से गंगा तक फैला हुआ था, कटता चला गया ऐसे ही जैसे अगणित मुर्तियो का भंजन होता गया। वृक्ष भी प्रकृति देवी , वन श्री की प्रतिमाएँ है । वसुंधराभोगी मानव और धर्मांध मानव एक ही सिक्के के दो पहलू है । वर्तमान और अतीत की आधंतहीन करी है गंडक नदी । न जाने कितने महत्माओ और संतो ने इसके किनारे तप और तेज पाया , किन्तु गंडक कभी गंभीर न बन सकी और इसलिए इसके किनारे तीर्थस्थल भी स्थाई न रह सके । गंडक ने कोई स्मृतियाँ नहीं छोरी । भवन नहीं , मंदिर नहीं, घाट नहीं । हवाई जहाज से गंडक घाटी के दोनों ओर नाना आकृति के ताल दिख परते है , कही उथले कही गहरे किन्तु प्रायः सभी शस्य - श्यामला धरती रूपी गगन के विशाल अंतस मे ठीठकी हुई बदहालियो की भांति टेढ़े - मेढ़े परन्तु शुभ्र एवं निर्मल ।इन तालो को कहते है' चौर 'और' मन '। चौर उथले ताल है जिनमे पानी जारो और गर्मियों में कम हो जाता है और खेती भी होती है। मन विशाल और गहरे ताल है । गंडक नदी का जल सदियों से चंचल रहा है । इसने कई तीरथ तोरे । अब वे खंडहर दिखाई परते है । भैसालोटन में भारतीय इंजीनियर जंगल के बीच निर्माण कार्य कर रहे है- नारायण की । ये बनने वाली नहरे की उस नारायण की अनेक भुंजायें है , बिजली के तारों का जाल ही तो उसका त्राणकर्ता चक्र है । लेखक मन ही मन उन्हें नमस्कार करता है ।ओ सदानीरा ! ओ नारायणी ! ओ महागंडक ! युगों से दिन - हीन जनता इन विविध नामो से गंडक को सम्बोधित करती रही है। गंडक की चिरचंचल धारा ने आराधना के फूलों को ठुकरा दिया । समासतः गंडक नदी की चाल -ढाल और उसके कारण परिवर्तनों को निबंधकार ने रेखांकित किया है ।

12'जूठन' कहानी का सारांश लिखे । 'जूठन' ओमप्रकाश वाल्मीकि के द्वारा रचित आत्मकथा है, जिसमे उन्होंने समाज व व्याप्त छुआ , छूत-जाति -प्रथा व अमीरी - गरीबी के बीच खाई का वर्णन किया है। कवि कहते है कि उनकी माँ गावं के कुछ संपन्न लोगो के यंहां चूल्हा -चौका करती तथा माल जल-की देख-रेख करती इसी काम में उनका हाथ लेखक के बरे भाई भाभी बाँटती थी । काम के बदले उन्हें पांच सेर अनाज तथा खाने के बाद बची -खुची भोजन मिलती थी । कवि लिखते है कि घर की स्थिति इतनी ख़राब थी कि कई बार भूखे रहना परता था । कवि लिखते है यह समाज का वर्ण व्यवस्था व शोषण की परिणाम है कि एक व्यक्ति के पास धन का अम्बार है तो दूसरा दो जुन की रोटी के लिए तरसता है तथा कई बार गाली भी सुनता है । यंहां तक जूठन पतल चाटकर व्यतीत करते है ।

13'हंसते हुए मेरा अकेलापन' शीर्षक पाठ का सारांश लिखे । 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' मलयज रचित डायरी -साहित्य है । डायरी लेखक के कर्म की साक्षी है , उसका संघर्ष की प्रवक्ता है । एक कलाकार के लिए यह निहायत जरुरी है कि उसमे' आग 'हो......... और वह खुद' ठंढा 'हो । प्रस्तुत डायरी साहित्य मे 10 मई , 78 की लिखी डायरी अत्यंत महत्वपूर्ण है । आदमी यथार्थ को जीता ही नही , यथार्थ को रचता भी है । रचा हुआ यथार्थ भोगे हुए यथार्थ से अलग है । भोगा हुआ यथार्थ का एक हिस्सा दुसरो को दे देता है । हर एक का भोगा हुआ यथार्थ दुसरो के दिए हुए हिस्से - हिस्से यथार्थ का एक सामूहिक नाम है। इसलिए यथार्थ को रचना एक नैतिक कर्म है , क्योकिं वह एक सामाजिक सत्य की भी सृष्टि करता है । यथार्थ के इस लेन - देन का नाम ही संसार है । इस संसार से सम्पृक्ति एक रचनात्मक कर्म है । इस कर्म के बिना मानवीयता अधूरी है । हर आदमी उस संसार को रचता है जिसमे वह जीता है और भोगता है । आदमी के होने की शर्त यह रचा जाता है , भोगा जाता संसार ही है । निष्कर्ष -: डायरी - साहित्य - लेखन एक कठिन कार्य है । आदमी यथार्थ को जीता ही नही ,यथार्थ को रचता भी है।

14'तिरिछ' शीर्षक कहानी का सारांश लिखे । 'तिरिछ' कहानी के कहानीकार उदय प्रकाश है । उदय प्रकाश नूतन तथ्यों और कथ्यों वाली कहानी लिखने मे सिध्दहस्त हैं ।तिरिछ एक आधुनिक त्रासदी है । आज के युग मे समय बहुत दूर तक वैश्विक और सार्वभौम हो चुका है ।विकास की दृष्टि से दुनिया के देशो का चाहे अब भी विभाजन किया जा सकता हो , पर कहीं ऐसे विभाजन अप्रासंगिक भी हो चुके हैं । ऐसे में भारत जैसे देश में यथार्थ और समय के बीच बहुसंख्यक समाज के लिए एक ऐसी अलंघ्य खाई उभरी है जिसके चलते जीवन में बेगानगी और अजनबियत आई है । कहानी नई पीढी के प्रतिनिधि बेटे के दृष्टिकोण से लिखी हुई और बाबूजी के बारे में है, जो सुदूर गाँव में रहते है । वे शहर जाते है और फिर शहर में उनके साथ जो कुछ

bsebcareer.com

घटित होता है , कहानी उसी के बारे में है । जो घटित हुआ है वह अत्यंत अप्रत्याशित , दारुण और भयावह है । आमूल बदलते हुए समय का नया , भीषण यथार्थ , जिसके शिकार बाबूजी बनते है ,बेटे के सपने में तिरिछ बनकर प्रकट होता है । तिरिछ एक विषैला और भयानक जंतु है , जो कहानी में प्रतीक बन जाता है तिरिछ कहानी जादई यथार्थ की कहानी कहा जाता है। यह यथार्थ बाबजी की गंवई वास्तविकता को पीछे छोरकर और आगे [illegible] उन देशों में जंहां यथार्थ और समय के बीच खाई उभरी वहां जादुई यथार्थ प्रकट हुआ।तिरिछ कहानी में बाबूजी को तिरिछ काट लेता है । तिरिछ का काटा हुआ आदमी बच नही पाता है । वही पिताजी की स्थिति हुई । वैसे यह वैज्ञानिक धारणा नही है । यंहां इस कहानी में बाबूजी को नई पीढी और पुरानी पीढी के अन्दर का तिरिछ काटे हुए है । नई पीढी की संवेदनशीलता मर गई है । शहरी लोगो से मिलकर बाबूजी परेशान और त्रस्त होते हैं । गाँव के सीधे - सरल- सहज बाबूजी के लिए शहर एक अनबूझ पहेली है । शहर का प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थी है । नयी पीढी हिंसक हो गयी है ।

15'गाँव का घर 'शीर्षक कविता का भाव स्पष्ट करे।' गाँव का घर 'कविता ज्ञानेन्द्रपति द्वारा रचित प्रमुख कविता है। इस कविता में कवि प्राचीन संस्कृति से समाप्त होने तथा उसके स्थान पर नवपूंजीवाद और आर्थिक उदारवाद के प्रचलन के कारण दुखी है । कवि उस दिन को याद करते जब बुजूर्ग के घर में प्रवेश से नयी कन्या अंदर चली जाती है, बरे घर में प्रवेश से पूर्व आवाज लेते है , खराऊ को खट-खट आवाज, घूँघट की महिलाएं । लराई - झगरा के बाद पंच परमेश्वर की बैठक , लालटेन व दीया के सामने अपने द्वार पर बैठकर पढ़ता बच्चा , वह होली चैती , नाटक , झंडा , भारे की लराई , कुश्ती , शहर की चौकाचौध ने सबका भूला दीया । आज लोगों में प्रेम - सदभाव समाप्त हैं , पंच परमेश्वर खो गए लोग अदालतों का दरवाजा खटखटा रहे है । अस्पताल मरीज से भरा -परा है , लोग आधि - व्याधी से ग्रसित हैं , अर्थात ग्रामीण संस्कृति नष्ट हो चुकी है तथा शहरो का चकाचौक ने मानव को मशीन बना दिया है ।

16'रोज' शीर्षक कहानी का सारांश:'रोज' शीर्षक कहानी के कहानीकार श्री सच्चिदानंद हीरानंद वत्स्यायन अज्ञेय है । वे एक प्रमुख कवि ,कथाकार उपन्यासकार ,विचारक और पत्रकार है। 'रोज' 'अज्ञेय जी की बहुचर्चित कहानी है। इन्होने भारतीय समाज में घरेलू स्त्री के जीवन और मनोदशा पर सहानुभूति पूर्वक विचार किया है। इस कहानी में मालती नामक एक नारी पात्र है, जो लेखक को रिश्ता में बहन लगती है। दोनों बचपन में साथ - साथ पले और बढे है। विद्यार्थी जीवन में मालती अत्यंत चंचल प्रवृति के लड़की थी। उसे पढ़ने से अधिक खेलने में रूचि थी ।उसकी शादी डॉक्टर से होती है। डाक्टर साहब अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हैं ,उसका नाम महेश्वर है ।वे शहर से दूर किसी पठारी क्षेत्र में पदस्थापित है ।मालती उनके साथ उसी पहाड़ी क्षेत्र में सरकारी रूम में रहती है। लेखक एक बार मालती से मिलने आते है । विवाह के बाद मालती के मनोदशा बदल गई ।उसका जीवन मशीन तुल्य हो गया है। वह सुबह में अपने पति के लिए नास्ता बनाती है। फिर दोपहर के लिए खाना बनाती है। फिर शाम को खाना बनाती है। वह गृह कार्य में इस प्रकार लगी रहती है -मानो कोई यंत्र हो गया हो ,उसका जीवन बिल्कुल व्यस्त हो गया है। लेखक के आने पर उसका स्वागत आपेक्षित खुशी के साथ नहीं करती है। मात्र औपचारिकता बस में बाते करती है। डाक्टर साहब दोपहर में घर आते है । लेखक का परिचय उनके साथ होता है। वे अपने मरीजों के बारे में बताते है कि वे अक्सर मरीजों का हाथ पैर काटा करते है। छोटे -छोटे जख्म गैंग्रीन हो जाता है। फिर किसी के हाथ पैर काटकर ऑप्रेशन करते है। मालती का एक छोटा बच्चा है ,जिसका नाम टीटी है। वे सदैव रोते रहता है। वो काफी चिड़चिरा -सा है। लेखक अनुभव करता है कि मालती के घर में जैसे किसी अभिशाप की चाय फैली है। घर में उत्साह और उमंग नहीं है। यद्यपि डॉक्टर साहब बुरे नहीं है, वे अपने काम में लगे रहते है। पहाड़ पे स्थित इस कावटर के न तो ठीक से पानी आते है न तो हरी सब्जी उपलब्ध है यहाँ पर कोई नौकर पात्र नहीं आता है। यहाँ पढ़ने लिखने का कोई साधन नहीं है । मालती न तो एक सफल पत्नी और न ही सफल माँ है। इनमे उनके चरित्र का कोई दोष नहीं है । परिस्थिती ऐसे है कि मालती बदल गए है । मालती जैसे लड़की शादी के बाद बदल गए है ।महिलाएं को गृह कार्य यत्रवत बना जाता है। उसके जीवन में कोई संवेदना नहीं है कोई राग नहीं ।

17'उसने कहा था' कहानी का सारांश-: **'उसने कहा था'** शीर्षक कहानी के कहानीकार' चंद्रधर शर्मा गुलेरी 'है । यह कहानी युद्ध के रेगिस्तान में प्रेम की मृगमरीचिका के समान है । इस कहानी में युद्ध की भयावहता और प्रेम की निश्छलता को देखा जा सकता है। बचपन का प्रेम कितना पवित्र और स्थायी बन सकता है यह भी इस कहानी में दिखाया गया है । **सूबेदारनी** लहना सिंह को उसकी प्रेम कहानी याद दिलाकर प्यार का उपहार मांगती है । और यही सात्विक प्रेम की प्रगाढ़ता है ।

'उसने कहा था' कहानी की शुरुआत अमृतसर के बाजार से होती है | इस कहानी का प्रमुख नायक लहना और नायिका होंरा जो बाद में सूबेदार हजारा सिंह की पत्नी होती है, कि कई बार मुलाकात अमृतसर के बाजार में एक दुकान पर होती है |बालक उस बालिका पर हम तस्वीर हो जाता है और 1 दिन जान पर खेलकर वह उसकी प्राण की रक्षा करता है |बात बात में जब लड़का उससे पूछता है कि उसकी कुड़माई हो गई तो वह दत्त कह कर भाग जाती है |इसी तरह उन दोनों की मुलाकात होती रहती है और 1 दिन पूछने पर लड़की धीरे से बोलती है - "हां हो गई देखते नहीं यह रेशम के कड़े हुए सालू"|लहना सिंह मायूस हो जाता है और अपने घर पहुंचता है |कई वर्ष बीत जाते हैं |25 वर्ष बाद वह चंचल और नटखट बालक लहना सिंह 77 नं० सिख राइफल का फौजी जमादार होता है |वह जर्मनी युद्ध के मैदान में कार्यरत होता है |जंग पर जाने से पहले सूबेदार का खत उसे मिलता है कि वह भी साथ चलेगा | सूबेदार हजारा सिंह की शादी उसी लड़की से हुई थी जिसको जमादार हजारा सिंह पसंद करता था |उनका एक पुत्र था जिसका नाम बोधा सिंह वह भी फौज में सैनिक जवान था |उन्हें लेने के लिए लहना सिंह उनके गांव जाता है फिर उनके घर पहुंचता है जहां सूबेदारनी उसे पहचान जाती है |ममता का स्रोत एक बार फिर दोनों के हृदय में उमड़ उठता है |वह लहना सिंह पर उम्मीद रखती है और अपने पति और पुत्र को युद्ध क्षेत्र में बचाने की बात कहती है जैसे उसने एक बार सूबेदारनी की जान बचाई थी |युद्ध क्षेत्र में पहुंचने पर लहना सिंह उसके बीमार पुत्र बोधा सिंह को अपनी सारी गर्म कपड़े पहनाता है |अपने कार्य को पूरा करता है |उसी समय एक जर्मन लपटन साहब की वर्दी धारण कर वहां एक फौजी आता है और सूबेदार हजारा सिंह को जर्मनों पर आक्रमण करने का आदेश देता है |सूबेदार हजारा सिंह आदेश के पालन के लिए मार्च करता है | नकली लपटन लहना को सिगरेट पीने के लिए देता है |लहना को समझने में देर नहीं लगती की हजारा सिंह धोखे से मौत के चंगुल में फंस गए हैं |इसके बाद वह अपने एक जवान को सूबेदार हजारा सिंह की मदद करने के लिए भेजते हैं और उन्हें गंभीर खतरे से बचा लेते हैं |इसी में नकली लपटन साहब उन पर वार कर देता है |उन्हें चोट लगती है किंतु घाव को कपड़े से बांधकर वही नकली लपटन साहब का वह काम तमाम कर देता है |सूबेदार हजारा सिंह भी वहां पहुंचते हैं और लड़ाई होती है और सभी दुश्मन के चंगुल से बच जाते हैं |लहना गंभीर चोट को साधारण चोर बताकर अस्पताल में इलाज के लिए दाखिल नहीं होता |उसे उस पीड़ा में ही सुख और आराम की अनुभूति होती है |सूबेदार के जाने के समय वह कहता है - सुनिए तो, सूबेदारनी को चिट्ठी लिखो तो मेरा माथा टेकना लिख देना और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे उसने जो कहा था, वह मैंने कर दिया |उसकी अंतिम सांसे इस वाक्य के साथ कि उसने कहा था जिसे मैंने पूरा किया, समाप्त हो जाती है |

18. पुत्र वियोग कविता का सारांश / भावार्थ पुत्र वियोग कविता में कवयित्री ने माता के ह्रदय की वेदना को अंकित किया है | माँ हर प्रकार के कष्टों को सहते हुए अपने पुत्र के लिए देवी देवता की अर्चना करती है | उसके मुख पर मलिनता को देखकर व्याकुल हो जाती है | जब भी वह माँ कहकर बुलाता है तो माँ सारे कर्मो को छोरकर दौरी आती है | उसे लोरियां गा कर और थपकिया देकर सुलाती है | लेकिन जब असमय उसका पुत्र उस से छीन जाता है तो उसके उपर दुखो का पहार आ जाता है | वह कहती है कि एक पल के लिए भी यदि उसका बेटा उसको मिल जाता तो वो उसे समझाती कि वो उसे छोर कर अब ना जाएँ | पिता , भाई- बहन भले ही उसे भूल सकते है लेकिन एक माँ को अपना बेटा खोकर अपना मन समझाना बहुत कठिन होता है |

19. बंधी हुई मुट्ठियों का लक्ष्य क्या है ? बंधी हुई मुट्ठियों में पांचो उँगलियाँ एक साथ हो जाती है जो की संगठन का प्रतीक है | संगठन में विलक्षण शक्ति होती है | किसी भी परिस्थिति में संगठन मार्ग निकालकर विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बना देती है | वास्तव में बंद मुट्ठी जनता के संगठन का प्रतिक है जिसके सामने विपरीत परिस्थितियां बौना पर जाती है | इसमे वह प्रखरता है कि वह किसी को अपने सामने घुटने टेकने के लिए बाध्य कर सकती है | इसमे प्रबल विरोध को भस्म करने की क्षमता है | इसमे जनता का संकल्प समाया हुआ है |

आर्थिक सहायता हेतु छात्र द्वारा प्रधानाचार्य को आवेदन पत्रलिखें |) 5 अंक (

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
किसान कॉलेज, बरियारपुर
विषय : आर्थिक सहायता हेतु
महाशय,

मैं बारहवीं कक्षा का अत्यंत दीन- हीन छात्र हूँ| मेरे पिता का निधन हो गया है| मैं अपनी पढाई मुश्किल से चला पा रहा हूँ| मेरे घर का स्थिति दयनीय है| मेरे परिवार में काम करने वाला कोई नही है| मैं कुछ आर्थिक सहायता निर्धन छात्र कोष से चाहता हूँ|

अतः श्रीमान से निवेदन है कि मुझे निर्धन छात्र कोष से आर्थिक सहायता की जाए| इसके लिए मैं श्रीमान का सदा आभारी रहूँगा|

आपका विश्वासी छात्र :
मनोज सिंह
वर्ग : बारहवीं

क्रमांक : 02

दिनांक : 22.01.2022

संक्षेपण -: 4 अंक

संक्षेपण का एक उपयुक्त और आकर्षक शीर्षक होना चाहिए;
संक्षेपण मूल अवतरण के एक- तिहाई भाग में स्पष्ट हो |
अंत में मूल अवतरण एव संक्षेपित अवतरण की शब्दसंख्या स्पस्ट रूप से लिख देना चाहिए -

उदाहरणहारा हुआ व्यक्ति वह है जिसने हारा हुआ व्यक्ति वह नही जो अपने प्रयत्न में सफल नही हुआ -: मुर्दा वह नही जो मर गय |आत्मविश्वास खो दिया है० है शक्ति के मुर्दा वह है जिसका आत्मविश्वास मर गया है , आत्मविश्वास के अंकुर से ही प्रयत्न का पौधा फूटता है और प्रयत्न के पौधे पर ही सफलता के |विश्वास में ही शक्ति है सफलअपने प्रयत्न को इस आधार पर स्थापित करो कि हमको अवश्य सफल होना है |फूल लगते हैंता हमें मिलकर रहेगी आत्मविश्वास के क्षेत्र में ?तो तुम चलोगे कैसेअगर तुम्हे यही विश्वास नही कि तुम मंजिल पर पहुँच सकते हो मैंयहां प्रश्नवाचक चिन्ह तो होता ही नही निराशा आदि शब्दों की कोई गुन्जीश नही , असफलता , संदेह , शंका शायद मुझ , चलूँ या न चलूँ० सफलता न मिलेकिया जाए या न किया जाए इत्यादी संदेहों की ,यह तो असंभव है , |कोई सम्भावना नही

उत्तर -: शीर्षक -:' आत्मविश्वास'

हारा हुआ व्यक्ति वह है जिसने आत्मविश्वास खो दिया ;शक्ति के मुर्दा वह है जिसका आत्मविश्वास मर गया है | आत्मविश्वास के क्षेत्र मेंआत्मविश्वास के अंकुर से ही प्रयत्नकर मनुष्य सफलता प्राप्त करता है |विश्वास मे ही शक्ति है निराशा , असफलता , संदेह ,शंकाइत्यादी शब्दों की गुंजाइश नही|

कुल शब्द- संख्या 146 –
संक्षेपण की शब्द49 – संख्या -

Short Questions:- 10अंक (2x5=10)

1.प्रवृतिमार्ग और निवृतिमार्ग क्या है? उत्तर-:वह रास्ता जिस पर चलकर गृहस्थ जीवन को अपनाया जाता है उसे प्रवृतिमार्ग कहते है जबकी जिस रास्ते में नारी को छोड़कर सन्यास को चुना जाता है उसे निवृतिमार्ग कहा जाता है।

2.बातचीत का तरीका क्या है? उत्तर -:बातचीत का तरीका यह है कि खुद की बातों को करने के साथ-साथ दूसरों की बातों को भी सुने तथा अगर दो लोग आपस में बात कर रहे हो तो वंहां अचानक न पहुँच जाए ।

3.गांधीजी के शिक्षा सम्बंधी आदर्श क्या थे? गांधीजी तत्कालीन शिक्षा पद्धति से **संतुष्ट** नहीं थे। वे वर्तमान शिक्षा पद्धति को बड़ा खौफनाक और हेय मानते थे। उनका आदर्श बच्चों में शिक्षा और चरित्र का विकास करना था। उनके मतानुसार वर्तमान शिक्षा पद्धति बच्चों को बौना बनाती है। उनका आदर्श की बच्चे ऐसे पुरुष और नारी के संपर्क में आए जो सुसंस्कृत हो। जिसका चरित्र उत्तम हो और कार्य सम्पादन की पद्धति श्रेष्ठ हो। गाँधी जी की वास्तविक शिक्षा यही थी। ये बच्चों में ज्ञान,चरित्र और बौधिक विकास चाहते थे। उनका यह कदापि मानना नहीं था कि शिक्षा प्राप्ति के बाद परंपरागत व्यवसाय को त्याग दिया जाए । वे मानते थे कि बच्चो द्वारा प्राप्त ज्ञान गाँवो को उन्नति के शिखर पर ले जाएगा। गाँधी जी का शिक्षा सम्बन्धी आदर्श यही थे।

4.उत्सव कौन और क्यों मना रहा है? उत्सव शासक वर्ग मना रहे हैं युद्ध जीतने की खुशी में ।

5.बुद्ध को नारियों को बौद्ध धर्म में प्रवेश की अनुमति क्यों देनी परी? बुद्ध ने अपने पत्नी के आग्रह पर अनिच्छा से नारियों को बौद्ध धर्म में प्रवेश की अनुमति देनी परी।

6.बाजा बजाना का क्या अर्थ है? बाजा बजाना का अर्थ है- सताधारी का गुणगान करना और उसकी हाँ में हाँ मिलाना।

7.बुद्ध ने आनंद से क्या कहा? बुद्ध ने आनंद से कहा कि बौद्ध धर्म 15 सौ वर्षो तक चलेगा लेकिन बौद्ध धर्म में नारियों के आने से अब ये 5 सौ वर्षो तक ही चलेगा।

8.रामचरितमानस को किसने लिखा-: तुलसी दास ने

9.चाँद का मुंह टेढ़ा है-: मुक्तिबोध

10.शिवाजी की तुलना भूषण ने किन-किन से की हैं? उत्तर -:शिवाजी की तुलना भूषण ने इंद्र ,राम, परशुराम, चीता, मृगराज, कृष्ण इत्यादि से की हैं ।

11.गैंग्रीन क्या हैं? उत्तर-:गैंग्रीन एक रोग है जिसमे खून के प्रवाह की कमी के कारण उत्तक मर जाते है। इससे हाथ तथा पैरों में गहरा घाव हो जाता हैं और वह तेजी से फैलता है

12.बिशनी मानक को लड़ाई में क्यों भेजती है? उत्तर-:बिशनी अपने बेटे को लड़ाई में कुछ पैसे कमाने हेतु भेजती है ताकि मुन्नी की शादी के लिए कपड़े खरीदे जा सके।

13.वजीरा सिंह कौन है? उत्तर -:वजीरा सिंह उसने कहा था शीर्षक कहानी का एक पात्र है जो पलटन का विदूषक होता है।

14. तुलसीदास को किस बस्तु की भूख है? उत्तर -:तुलसीदास राम की भक्ति के भूखे है वे राम के समक्ष अपने को समर्पित करके भक्ति की भीख मांगते है।

15.भगत सिंह की विद्यार्थियों से क्या अपेक्षाएं है? उत्तर -:भगत सिंह विद्यार्थियों से अपेक्षा करते है कि वे तन-मन धन-से देश की सेवा करें। वे चाहते है की विद्यार्थी देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दें । वे चाहते है कि विद्यार्थी पढ़े लिखे साथ ही उन्हें पॉलिटिक्स का भी ज्ञान हो

16.बूढ़ा मशकवाला क्या कहता है और क्यों कहता है? उत्तर-:बूढ़ा मशकवाला युद्ध का सत्य जानता है वह कहता है कि हम एक बार फिर हार गए और बाजे के साथ हार लौट रही है।वह सत्य को जानता है उसने लड़ाई के अंजाम को देखा है और वह अपने हृदय की बात को कहता है ।

17.हरचरना कौन है उसकी क्या पहचान है? उत्तर-:हरचरना आम आदमी का प्रतिनिधि है। आम आदमी अभावों में जीता है और महाबली नेताओं का गुणगान करता है। हरचरना ढीला- ढाला पाजामा पहने राष्ट्रीय त्योंहार के दिन झण्डा फहराए जाने के कार्यक्रम में सम्मिलित होता है और इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी अधिनायक का गुणगान करता है

18.शिवाजी की तुलना भूषण ने मृगराज से क्यों की हैं? वीररस के कवि भूषण ने शिवाजी की तुलना जंगलो के राजा शेर से की है। विशाल शरीरधारी जंगली हाथी को शेर मार डालता है। हाथी एक स्थूल जानवर है,जबकि शेर एक फुर्तीला जानवर है। हाथी और शेर की लराई में हाथी मारा जाता है ।उसी प्रकार शिवाजी वीर,साहसी और पराक्रमी थे। वे मृगराज की तरह पराक्रमी वीर थे।

19.*लहना सिंह ने बोधा के प्रति किस त्याग का परिचय दिया था? बोधा सिंह खाली बिस्कुटों के टीन पर अपने दोनों कम्बल बिछाकर और बरान कोट ओड़ सो रहा था। वह कम्बल लहना सिंह का था। लहना सिंह पहरे पर थे , पर एक आंख बोधा सिंह पर भी टिकी हुई थी।बोधा सिंह कराहा,उसने पानी माँगा। लहना सिंह ने कटोरा उसके मुंह से लगाकर पूछा, कैसा है ?बोधा ने बताया कंपकंपी छुट नही रही है रोम -रोम में तार दौर रहे है । दान्त अज रहे है ।लहना उसको अपना कम्बल दे चुका था अपनी जरसी भी देना चाहता है ।बोधा ने यह पूछा कि अभी तुम क्या पहनोगे ?तो वह पहले यह कहता है कि मेरे पास सिगरी है और मुझे गर्मी भी लगती है । लहना सिंह एक सफ़ेद झूठ बोल देता है,उसके पास दूसरी गरम जरसी है। आज सबेरे ही आई है। विलायत से कहकर उसने बोधा को अपनी जरसी पहना दी ।

20. दलविहीन लोकतंत्र और साम्यवाद में कैसा सम्बन्ध है ? दलविहीन लोकतंत्र सर्वोदय का मुख्य राजनीतिक सिधांत है। ग्रामसभाओं के आधार पर दलविहीन प्रतिनिधित्व की स्थापना हो। दलविहीन लोकतंत्र मार्क्सवाद और लेनिनवाद के उदेश्यों में से है। मार्क्सवाद के अनुसार समाज जैसे- जैसे साम्यवाद की ओर बढ़ता जायेगा, वैसे - वैसे राज्य- स्टेट का क्षय होता जायेगा और अंत में स्टेटलेस सोसाईटी की स्थापना होगी। वह समाज अवश्य ही लोकतान्त्रिक होगा , बल्कि उसी समाज में लोकतंत्र का सच्चा स्वरूप प्रकट होगा। यह लोकतंत्र निश्चय ही दलविहीन होगा ।

21.जे.पी.किस प्रकार का नेतृत्व देना चाहते थे? वे साफ कहते है उन्हें नेता नही बनना है। मुझे यह भी मंजूर नही है कि कोई मुझे डिक्टेट करे कि जयप्रकाश नारायण तुम्हे यह करना है ।वह कहते है कि मै नेतृत्व छोर दूंगा ।एक बात उन्होंने और कही मै सबकी सलाह लूँगा, तालिया नही । बात सुनिए, बात समझिये, सबकी बात मैं भी सुनुगा। छात्रो की बात, जितना भी ज्यादा होगा जितना भी समय मेरे पास होगा समझूंगा। उनसे बहस करूंगा और अधिक से अधिक उनकी बात स्वीकार करूंगा।जन संघर्ष समितियों की भी बात सुनुगा, पर फैसला मेरा ही होगा। सबको आज्ञा माननी ही होगी । तभी इस नेतृत्व का कुछ मतलब है।

22.चंपारण क्षेत्र में बाढ़ की प्रचंडता के बढ़ने के क्या कारण हैं? बिहार के उत्तर-पश्चिम कोण में **अवस्थित** चंपारण की भूमि पेर, पौधों और जंगलो से भरी हुई थी । इन पेरो की कटाई कृषि और अन्य आवश्यकताओ के लिए कर दी गयी। बरसात के दिनों में यहाँ कि नदियां बाढ़ का पानी ला देती हैं । मसान, सिकराना, पंडई और गंडक इत्यादि नदियां यहाँ के निवासियो को ललकारती है । चारो ओर जल - ही -जल दिखाई परती है

23.गंगा पर पुल बनाने में अंग्रेजो ने दिलचस्पी क्यों नहीं ली? चंपारण में नीलहे गोरे किसानों का शोषण और अन्य अत्याचार करते थे। दक्षिण बिहार के बागी विचारो का असर चंपारण में देर से पहुंचे इसीलिए गंगा पर

पुल बनाने की स्कीम में तत्कालीन शासन ने कोई दिलचस्पी नही दिखाई और यों वर्षों तक चंपारण में गोरे निलहों का राज ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया में पनपता रहा।

24.गाँधी जी ने झोंपरी कहां बनाई थी? सन् 1917 में पुंडलीक जी को गाँधी जी ने बेलगाँव से मितिहरवा बुलाया था, आश्रम में रहकर बच्चो को पढ़ने और ग्रामवासियों के दिल का भय दूर करने के लिए। पुंडलीक जी ने वह कमरा दिखाया जहां बैठकर गांधीजी काम करते थे और वह मेज जिसपर उन्होंने चिठियां लिखी। एक मठ के निकट यह आश्रम है, गाँव मे गाँधी जी को आश्रय देने की किसी को हिमत नहीं थी।मठ के महंत ने एक महुए के पेर के नीचे जगह दी। गाँधी जी ने वही खटिया बिछा ली और बाद में एक झोंपरी बनाई जिसमें डॉक्टर देव आकर रहे और आश्रम चलाते रहे उस झोंपरी को एमन साहब के **करमचारियों** ने जला दिया।बाद में वह खपरैल का भवन बना जो अब भी कुछ मौलिक अवस्था में हैं।

25.नामवर सिंह किन कविताओं को श्रेष्ठ मानते है? आज का आलोचक अधिकांशतः कविताओ की सामाजिक सार्थकता ढूंढने का ही प्रयास कर रहा है, यही कारण है ,कि श्री नामवर सिंह भी विशेष रूप से उन कविताओं को श्रेष्ठ मानते है जो सीधे- सीधे सामाजिक न होकर अपनी **वैयक्तिकता** और आत्मपरकता के कारण प्रगीत काव्य की कोटि में आती है।

26.क्या जूठन शीर्षक सार्थक हैं? 'जूठन 'एक वाल्मीकि परिवार की व्यथा हैं। उस परिवार को जूठन ब्याह ,शादी आदि में प्राप्त होती थी, उसको सुखाकर परिवार के सदस्य बरे चाव से खाते थे, यह उन जैसे हजारों परिवारों का तत्कालीन दुर्भाग्य ही था, इस **दृष्टि** से यह शीर्षक सार्थक है।

27.उषा का जादू कैसा है? उषा का रंग रूप-मादक है, उसका आगमन और भी अधिक मद भरा है, चारों ओर हलचल मचा देता है। और उसका प्रभाव भी विलक्षण है। उसके जादू का ही प्रभाव है कि नील शंख के समान दिखाई देता है। कभी वही आकाश दिखाई देता है - मानो राख से लिपा हुआ गीला चौका हो ,अथवा लाल केसर के, जल से धूलि कोई काली सिल हो अथवा किसी स्लेट पर लाल खरिया पोत दी गयी हो। यह उषा का ही प्रभाव है कि वह अपना जादू बरे प्रभावी ढंग से विखेर देती है और यह वह सूर्योदय से पूर्व ही करती है।

28.हार-जीत कविता में किस प्रश्न को उठाया गया है? हार-जीत कविता का केन्द्रीय भाव क्या है ? हार-जीत कविता में देश की राजनीति, युद्ध, इतिहास और आम आदमी को लेकर आधुनिक प्रसंगों द्वारा अनेक प्रश्न उठाये गये है। वर्तमान में राष्ट्र और जन की क्या स्थिति है, इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। उक्त गद्य कविता में कवि द्वारा प्रयुक्त शासक, सेना, नागरिक और मशकवाला शब्द प्रतीक-योग्य है। शासक वर्ग अपनी दुनिया में रमा हुआ है। नागरिकों की स्थिति बरी ही असमंजस वाली है। मशकवाला पुरे घटना क्रम की सही जानकारी रखता है लेकिन उस पर बंदिसे है की वह सत्य से अवगत किसी को नही कराये।

29.पंच परमेश्वर के खो जाने को लेकर कवि चिंतित क्यों है? गाँवो की पुरानी व्यवस्था तथा नैतिक मूल्यों का वर्तमान व्यवस्था द्वारा **ह्रास**कवि की चिंता का विषय है। नई व्यवस्था में पंचायती राज में मानो पंच परमेश्वर खो गये है। पुरानी ग्रामीण व्यवस्था में गाँवो के विवाद को निपटने में पंच- परमेश्वर तथा पंचायत की भूमिका का वर्णन किया है वही वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था में व्याप्त **भ्रस्टाचार**, अनैतिकता तथा अराजकता की ओर संकेत किया है। कवि की ऐसी प्रतीति है कि पंच-परमेश्वर का सौम्य रूप पंचायती-राज की **अव्यवस्था** _तथा अन्याय के अंधकार में लुप्त हो गया है।

30.गाँव का घर कविता के केंद्रीय भाव पर विचार करे। बदलते परिवेश और आचार-विचार से कवि अत्यंत ही चिंतित है। गाँवों में पसर रही कुरीतियों ,कलह और वैमनस्य से संवेदनशील कवि उदास और चिंतित है। गाँव का घर एक कालजयी कृति है। बरो के प्रति आदर और आत्मयता के भाव विलुप्त होते जा रहे है। घर की ढहती दीवार अपनी अतीत की गाथा को लेकर अवस्थित है। अब बचपन भी तो नहीं रहा **जहाँ निष्कुलषता** और सहज भाव अपने आप उभरता था।

31.बातचीत के सम्बन्ध में बेन जॉनसन और एडीसन के क्या विचार है? बेन जॉनसन के अनुसार बोलने से हीं मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है, जो सर्वथा उचित है। एडीसन के अनुसार असल बातचीत सिर्फ दो **व्यक्तियों** में हो सकती है।

32.रामचंद्र शुक्ल के काव्य-आदर्श क्या थे? रामचन्द्र शुक्ल के काव्य सिध्दांत के आदर्श भी प्रबंध काव्य ही थे। आधुनिक कविता से उन्हें शिकायत थी। इसका कारण काव्य में जीवन की अनेक परिस्थितियो की ओर से ली जानेवाली प्रसंगों या आख्यानों की **उद्भावना** बंद सी हो गयी है

33.नारी की पराधीनता कब से आरंभ हुई? उत्तर-:जब मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया तब से नारी की पराधीनता आरंभ हो गई। इसके आविष्कार से नारी घर में सिमट के रह गई। उसका जीवन सिमित हो गया और वह पुरुषो के अधीन हो गई।

34.कबीर के ईश्वर का रूप कैसा है? उत्तर -:कबीर के ईश्वर का रूप निर्गुण और निरंकार है। उनका कोई आकार-प्रकार नहीं है उनका न तो जन्म होता है और न ही वे अवतार लेते है ।

35. बिटियां से क्या सवाल किया गया है? उत्तर-:बिटियां से यह सवाल किया गया कि आस-पास कहाँ- कहाँ लोहा हैं

जहां भय है वहां मेधा नहीं हो सकती क्यों? उत्तर-:जे. कृष्णमूर्ति कहते है जहां भय है वहां मेधा नहीं हो सकती। भय के कारण स्वतंत्रता बाधक बनी रहती है। हम जीवन के विभिन्न परिस्थितियों एवं परंपराओं से भयभीत रहते है। इसी कारण हम किसी कार्य को स्वतंत्र होकर नहीं करते और हमे सफलता नहीं मिलती।

36.प्यार का इशारा और क्रोध का दुधारा से क्या तात्पर्य है? उत्तर-:प्यार से सभी लोग जीवन जीते है जबकि क्रोध की तलवार से बड़े-बड़े पूंजीपतियों का नाश हो जाता है। एक तरफ जनता का शोशण करने वालो के खिलाफ लड़ाई चलती है तो दूसरी ओर जन संघर्ष करने वाले श्रमजीवी प्यार से रहते है।

37.माँ के लिए अपना मन समझाना कब कठिन है और क्यों? Ans:-जब कोई माँ अपने बेटे को खो देती है तब उसके लिए अपने मन को समझाना कठिन हो जाता है माँ अपने बेटे के बिना जीवित नहीं रह सकती। बेटे के मृत्यु के बाद माँ को जीवन नीरस लगने लगता है इसी कारण माँ को अपना मन समझाना कठिन लगता है

38.नाभादास ने अपने छप्पय में कबीरदास के बारे में क्या कहा है? Ans:-जो व्यक्ति अपने भक्ति से विमुख होता है वह अपना सारा धर्म समाप्त कर लेता है। वह अपने योग,व्रत,धर्म आदि को तुच्छ बना देता है। वह अपने कर्मो की महता को नहीं समझता है। अतः मनुष्य को योग,व्रत,समय,हित के माध्यम से सद कार्यो को करना चाहिए। इससे दूर रहकर वह भक्ति के सभी स्वरूपों का वरन नहीं कर सकता।

39.बरसात को सरस कहने का क्या अभिप्राय है/?सरस बरसात से क्या तात्पर्य है ? Ans:- जल रस है ।वह सृष्टि में रस का संचार करता है। जल बरस कर वृक्ष ,पौधे ,फल ,सबमें रस का संचार करता है।गर्मी में पृथ्वी बूंदों के लिए तरसती है। जब वर्षा होती है तो सारे जीव-जन्तु आनंद से विभोर हो जाते है ।जीवन में श्रद्धा भी यही कार्य करती है। वर्षा बसुन्धरा पर यही कार्य करती है इसलिए बरसात को सरस कहा गया है।

40.सजल जलजात का क्या अर्थ है? Ans :- सजल जलजात का अर्थ जल में उत्पन्न होने वाला या जल में खिला सुंदर कमल। यंहा उसका प्रतिकार्थ यह है कि मार्मिक जीवन के मार्मिक क्षणों में सदा कमल के सदृश्य खिलने वाला व्यक्ति।

41.लोहा क्या है ? इसकी खोज क्यों की जा रही है ? Ans:- लोहा से कर्म का तात्पर्य है व्यक्ति कर्म करता है और लोहा कठिन कर्म का प्रतीक है। हर मेहनतकश लोहा का प्रतीक है। घर गृहस्थी के औजार लोहा से ही निर्मित होते है। स्त्रियाँ भी लोहा का ही प्रतीक है वे भी रोजमरें की जिन्दगी में अपने कर्मो में लगी रहती है ।लोहा अधिकतर सर्वहारा वर्ग के पास रहता है ।यदि मेहनतकश आदमी कर्म करना छोर देगा तो सामाजिक संरचना बिगर जाएगी ।इसीलिए लोहे की खोज हो रही है ।

42.तुलसी सीता से कैसी सहायता मांगते है? Ans:-तुलसी सीता से कहते है कि हे माँ! आप प्रभु श्रीराम के सबसे निकटवर्ती है ।आप प्रभु से मेरी सिफारिश कर दीजियेगा। यदि वे मेरे बारे में पूछे तो बताएयेगा की मैं उनकी दासी का दास हूँ ।जिसका उदर भी प्रभु की कृपा से भरता है ।प्रभु तो कृपालु है वे भक्त वत्सल है और वे मुझपर कृपा जरुर करेंगे ।तब मेरा उद्धार हो जायेगा ।

43.उसने कहा था का केंद्रीय भाव क्या है वर्णन करें ?? Ans:- यह कहानी युद्ध के रेगिस्तान में प्रेम की मृगमरीचिका के समान है । इस कहानी में युद्ध की भयावहता और प्रेम की निश्छलता को देखा जा सकता है। बचपन का प्रेम कितना पवित्र और स्थायी बन सकता है यह भी इस कहानी में दिखाया गया है । सूबेदारिन लहना सिंह को उसकी प्रेम कहानी याद दिलाकर प्यार का उपहार मांगती है । और यही सात्विक प्रेम की प्रगाढ़ता है। यह प्रेम ही इस कहानी का केंद्रीय भाव है।

44.प्रश्न:- अगर हममें वाक्शक्ति न होती तो क्या होती? उत्तर:- अगर हममें वाक्शक्ति ना होती तो हम गूंगे होते। सृष्टि की सर्वोत्तम कृति मानव है तथा इसमें उनकी वाक्शक्ति के कारण वह वार्तालाप करता है ,अपने विचारों को रखता है तथा दूसरों के बात को सुनता है ,अगर वाकशक्ति न होती तो जानवरों के समान होता संवेदना हिना। अतः वाक्य शक्ति ईश्वर द्वारा दी गई अनमोल उपहार है।

45.प्रश्न:-भ्रष्टाचार की जड़ क्या है ?इसे दुर करने के लिए आप क्या सुझाव देंगे? उत्तर:-जेपी के अनुसार भ्रष्टाचार की जड़ सरकार की गलत नीतियां है ,इसके कारण भूख ,महंगाई ,बेरोजगारी ,घूसखोरी .तथा कालाबाजारी है। इस भ्रष्टाचार के जीवन नष्ट हो रहा है। इसे दूर करने के लिए सरकार का समाजवादी तरीके से नीति बनाना चाहिए।

46.प्रश्न:-चौर और मन किसे कहते हैं? उत्तर:-पश्चिम चंपारण में गंडक नदी के दोनों ओर ताल दिखाई देते हैं, ये कहीं गहरे तो कहीं उथले पर जल से भरे पड़े हैं ,इन जल से भर ताल को ही हम चौर और मन कहते हैं।

47.प्रश्न:- सड़कों को क्यों सींचा जा रहा है? उत्तर:- सड़कों को इसलिए सींचा जा रहा है, ताकि जब विजय जुलूस निकले तो सड़कों का धूल न उरे क्योंकि धूल से राजा की छवि खराब की जाती है।

48.प्रश्न:- डायरी क्या है? उत्तर:- डायरी व्यक्ति के विचारों की एक रचना है ,जिसमें व्यक्ति तिथि क्रम के अनुसार अपने जीवन की घटनाओं को रचता है। डायरी से ही पता चलता है कि व्यक्ति यथार्थ को जीता नहीं बल्कि यथार्थ को रचता भी है।

49.प्रश्न:- प्रगीत क्या है? उत्तर:- प्रगीत सुख, दुख की आवेशमयी अवस्था विशेष के गिने-चुने शब्दों में स्वर की साधना की अभिव्यक्ति ही गीत या प्रगीत है।

50.प्रश्न:-धाँगड .शब्द का क्या आशय है? उत्तर:- धाँगड़ ओराँव भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ भाड़े का मजदूर होता है।वास्तव में धाँगड़ एक आदिवासी है ,जिसे नीलहे, चंपारण लाए थे ,नील के खेती में काम करने के लिए क्योंकि ये काफी साहसी और परिश्रमिक प्रवृत्ति का था।

51.प्रश्न:- चंपारण क्षेत्र में बाढ़ की प्रचंडता के क्या कारण थे? उत्तर:- चंपारण क्षेत्र में बाढ़ की प्रचंडता का मूल कारण जंगल को काटना है। वृक्ष अपने जड़ों से मिट्टी को पकड़े रहता है साथ ही नदियों के जल गत्ति को भी कम करते हैं पर वनों की कटाई के कारण नदी जल पर नियंत्रण करने वाला कोई अन्य विकल्प न था जो चंपारण में बाढ़ का मूल कारण था।

52.प्रश्न:- पुंडलीक जी कौन थे? उत्तर:-पुंडलीक जी गांधी जी के आदेश पर चलने वाला एक सच्चा गांधीवादी पुरुष था ,गांधी द्वारा स्थापित भितिहरवा आश्रम विद्यालय के शिक्षक थे। पहले यह व्यवस्था थी कि अगर कोई साहब आए तो **गुह्र**पति उसके घोड़े का लगाम पकड़े पर एक बार एक साहब उनके विद्यालय आए उन्होंने घोड़े का लगाम पकड़ने से मना कर दिया तथा विद्यालय आने को कहा।

53.प्रश्न:-मानक और सिपाही एक दूसरे को क्यों मारना चाहते हैं? उत्तर:-मानक वर्मा की लड़ाई में अंग्रेज फौज की तरफ से जापानी सेना के विरुद्ध लड़ रहे थे ,चुंकी लड़ाई में सिपाही एक दूसरे के दुश्मन होते हैं , इसलिए वे एक दूसरे को मारना चाहते हैं।

54.प्रश्न:- शिक्षा का अर्थ क्या है? उत्तर:- शिक्षा का अर्थ जीवन को सत्य से परिचित कराना ,जीवन की प्रक्रियां को समझना। शिक्षा हमारे जीवन की सभी समस्याओं का निराकरण करने वाली यंत्र है। यह सीखने व सिखाने की कला है। जीने की राह है।

55.प्रश्न:- विद्यार्थी को राजनीति में क्यों भाग लेना चाहिए? उत्तर:- विद्यार्थी देश के कर्णधार होते हैं। भविष्य की बागडोर उन्हीं को लेना है। देश में समस्या सुधार का हिस्सा है। यदि वह राजनीति में भाग लेंगे तब जाकर ही व्यवस्था व उनकी अच्छाई या बुराई को समझ पाएंगे और उसमें सुधार का मार्ग प्रशस्त कर पाएंगे। इसलिए छात्र को राजनीति में भाग लेना चाहिए।

56.प्रश्न:-कला कला के लिए के सिद्धांत क्या है? उत्तर:-कला कला के लिए है ,यह मुक्तुक काव्य की विशेषता है जिसमें रामचंद्र शुक्ल कहते हैं ,मुक्तक काव्य में यर्थाथ परकता अलग हो सकती है। समाजजिकता में संभावना का पूरा एहसास होता है।

57.प्रश्न:-आर्ट ऑफ कन्वर्सेशन क्या है? उत्तर:-आर्ट ऑफ **कन्वर्सेशन** बातचीत करने का एक तरीका है। जिसमें व्यक्ति समय परिस्थिति स्थान को ध्यान में रखते हुए वार्तालाप करते हैं। जैसे कभी मन को रमाने के लिए तो कभी समय को बिताने के लिए तो कभी अपने अकेलापन को दूर करने के लिए।

58.प्रश्न:-लहना सिंह कौन था? उत्तर:-लहना सिंह77 वीं सिख राइफल्स का जमादार था। जो बचपन में तांगा से एक लड़की का प्राण बचाया व उससे प्रेम कर बैठा और अंत में अपना प्राण देकर भी उस लड़की के पति व पुत्र का प्राण बचाया। यह उसने कहा था कहानी का मुख्य पात्र है।

59. प्रश्न:-भगत सिंह के अनुसार किस प्रकार की मृत्यु अच्छी है? उत्तर:- भगत सिंह के अनुसार देश सेवा के लिए दी गई फांसी व मृत्यु सुंदर है क्योंकि इसमें व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती है बल्कि वह अमर हो जाता है।

60.प्रश्न:- दानव दुरात्मा का मतलब क्या हैंउत्तर:- दानव दुरात्मा का मतलब है कि मानव जो मानवीय गुणों से परे हो ,उसका दृष्टिकोण असामाजिक ,अव्यावहारिक व समाज तथा राष्ट्रविरोधी हो।

61.प्रश्न:- कवयित्री का खिलौना क्या है? उत्तर:- कवयित्री का खिलौना उसका पुत्र है ,जिसे देखकर व उसके साथ रहकर सारे आनंद पा लेती है। अतः कवयित्री अपने पुत्र को खिलौना के रूप में स्वीकार करती है।

62.प्रश्न:- तिरिछ क्या हैं ?कहानी में यह किसका प्रतीक हैं? उत्तर:- तिरिछ छिपकीली प्रजाति का एक जहरीला जीव है ,जिसे विषखापर भी कहते हैं। कहानी में तिरिछ प्रचलित विश्वासी और रूढ़ियों का प्रतीक है।

63.प्रश्न:- कवि कृष्ण को जगाने के लिये क्या-क्या उपमा देते हैं? उत्तर:- कवि कृष्ण को जगाने के लिए ब्रजराज कुवर जागीय ,कमल के फूल खिल चुके ,कुमुदनीयों का समूह संकुचित हो गया ,कमल सदृश्य हाथों वाले कृष्ण उठिए।

64.प्रश्न:-तुलसी सीधे राम से न कहवाकर सीता से अपनी बात क्यों कहलवाना चाहते हैं? उत्तर:- तुलसी अपनी बात सीधे राम से न कहकर सीता से इसलिए कहलवाना चाहते हैं कि सीता राम की धर्मपत्नी व प्रिय है, पुरुष अपनी पत्नी से बेहद प्रेम करता है तथा उसकी प्रत्येक बात को मान लेता है, इसलिए कवि अपनी बात सीधे राम से न कहकर सीता से कहलवाना चाहते हैं।

65.प्रश्न:- चातकी किसके लिये तरसती है? उत्तर:-चातकी चातक के लिए तरसती है। संध्या के समय चातक नदी के एक किनारे तथा चातकी दूसरे किनारे रात भर वे अलग -अलग रहकर एक दूसरे के विरह में तड़पती है।

66.प्रश्न:-पुत्र के लिए मां क्या-क्या करती है? उत्तर:- मां पुत्र के लिए हर पल सचेत रहती है ,उसे डर लगी रहती है कि उसे कहीं लू न लग जाए ,बुखार न आ जाए सर्दी न लग जाए ,इसलिए अपने गोद से नहीं उतारती है तथा अपने आंचल के ओट में छिपाए रखती है।

67. प्रश्न:- प्रातः काल का नभ कैसा दिखता है? उत्तर:- प्रातः काल का नभ पूर्णतः नीले भाँख के समान **स्वक्ष** दिखता है, जिसकी लालिमा के साथ आने वाली ज्वाला हलके रूप में झोंकता नजर आता है।

68.प्रश्न:- जन -जन का चेहरा एक से कवि का क्या तात्पर्य है? उत्तर:-पीड़ित व संघर्षशील जनता जो अपने मानवीय अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं वे चारों ओर सभी, न्याय, शांति व **बुधुत्व** के लिए प्रयासरत है, इसलिए कवि ने जन -जन का चेहरा एक बताया है।

69.प्रश्न:- हरिचरण को हरिचरना क्यों कहा गया है? उत्तर:- हरिचरण शब्द कुलिन नगरीय संस्कृति परिचायक है , जबकी हरचरना ग्राम्य संस्कृति का हरिचरण से विशिष्ट व्यक्ति की पहचान होती है पर हरचरना गांव में गरीबी फटेहाली दरिद्र असहाय स्थिति का परिचायक है।

70.प्रश्न:- डायरी का लिखा जाना क्यों मुश्किल है? उत्तर:- डायरी जिसमें व्यक्ति के प्रतिदिन के घटनाओं व जीवन का वर्णन होता है। डायरी व्यक्ति के जीवन का दर्पण होता है। डायरी के लेखक मलयज कहते हैं ,डायरी वही लिख सकता है ,जिसका जीवन नियमित व स्थाई हो। आलसी लापरवाह कामचोर के दिशाहीन व्यक्ति डायरी नहीं लिख सकता है। इसलिए कवि ने कहा डायरी का लिखा जाना मुश्किल है